समाज व संस्कृति के विकास में संगीत की भूमिका

डॉ० संगीता गोरंग

एसोसिऐट प्रोफेसर, संगीत विभागाध्यक्षा

के०वी०ए० डी०ए०वी० कॉलेज फार वूमन

करनाल

Email: sangeetagorang@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० संगीता गोरंग

''समाज व संस्कृति के विकास में संगीत की भूमिका'

Artistic Narration 2020, Vol. XI, No. 1, pp. 70-73

https://anubooks.com/?page_id=6863

सारांश

संगीत का समाज से घनिष्ठ संबंध है। संगीत से सुधर अत्यन्त सुगम हो जाता है। संगीत कलाकार अपने कला के सृजन द्वारा समाज में मानवता व सभ्यता की प्रतिस्थापना करता है और व्यक्तिगत जीवन को उत्कृष्ट बनाकर सामाजिक जीवन को भी सफल बना देता है। संगीत मानव समाज की सांगीतिक–सांस्कृतिक परम्पराओं का मूल प्रतीक है। यह कला प्राचीन काल से जन जीवन के आत्मिक आनन्द, उल्लास की अनुभूति का मधुरतम माध्यम रही है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के ग्रन्थों के अनुसार–"गीतम् वाद्यम् तथा नृत्यम् त्रयं संगीतमुच्चते" अर्थात् गायन, वादन तथा नर्तन की त्रिवेणी का संगम ही संगीत है।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में समाज के बदलते सामाजिक मूल्यों के साथ संगीत पर भी प्रभाव पड़ा है। आज टेक्नोलॉजी का बहुत विकास हुआ है। जिससे समाज में चारों ओर युवा वर्ग को प्रलोभन देने वाली प्रवृत्तियाँ पनप रही है। साथ ही वह टी.वी. आदि की तरफ खिंचा जा रहा है। व्यावसायिक मानसिकता बढ़ जाने से सम्पूर्ण सांगीतिक वातावरण दूषित हो रहा है। आज का मानव समाज जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है, उनमें मानव मात्र के अस्तित्व पर प्रश्न लग गया है। संगीत प्रचार के माध्यम के रूप में व्यापकता के साथ अपनाया जा सकता है। जिससे स्वस्थ समाज का निर्माण हो। संगीत सामूहिकता के साथ–साथ अनुशासन भी प्रदान करता है। यह अनुशासन संगीत को अपूर्व लय प्रदान करता है और यही लय स्वर से घुल मिलकर हृदयों में संवाद पैदा कर देता है। केवल 'जन–गण–मन' का सामूहिक गान लाखों भारतीयों में देश के प्रति गर्व की भावना पैदा करता है। लोक संगीत का प्रयोग भी इस दृष्टि से अत्यधिक प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि लोक संगीत मन के भावों को स्वच्छंद एवं सामूहिक रूप से व्यक्त करने का यह सरलतम माध्यम है।

समाज से अभिप्राय

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा समाज की सबसे छोटी एवं महत्त्वपूर्ण इकाई है। वह जो कुछ भी सीखता है अनुभव करता है या प्राप्त करता है, उसका आधार समाज ही होता है। मनुष्य समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग है या यह कह सकते हैं कि "समाज यदि जननी है तो व्यक्ति उसका बालक" ठीक जिस तरह से एक छोटा सा शिशु अपने माता–पिता के गुण–दोषों को संचित कर विकसित होता है उसी तरह मनुष्य समाज के गुण व दोषों को अपने जीवन में संचित कर अपना भविष्य बनाता है।

संगीत कला एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है संगीत और समाज के संदर्भ में हमारे प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद जी के अनुसार "भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से संगीत मनुष्य के लिए साधना का विषय है भौतिक जीवन में संगीत मनोरंजन का उतना ही बड़ा साधन है जितना कि वह आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रेरणा का स्त्रोत है। आज ही नहीं सदियों से हमारे देश में संगीत और भगवत् भक्त का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है इसलिए मैं समझाता हूँ कि संगीत में जो प्रभाव और शक्ति है उसका प्रयोग मानव कल्याण के लिए होना चाहिए। साधारण मनोरंजन से लेकर आध्यात्मिक उड़ान तक सभी कुछ मानव कल्याण की परीधि में आता है।" इनके ये विचार प्रदर्शित करते हैं कि प्राचीन समय से ही संगीत की परम्परा समाज में धर्म, दर्शन, संस्कृति का आधार स्तर रही हे।

संगीत के माध्यम से मनुष्य परमानंद को प्राप्त करता आया है और इस परमानंद में मनुष्य को शान्ति का अनुभव होता है तथा साथ ही साथ उसकी मानसिक शक्ति का भी पोषण होता है। संगीत कला मानव जीवन के हर रंग को अपने रंग में रंग लेती है। संगीत कला मनुष्य के हृदय की भाषा है जिस कारण संगीत का अन्य किसी भी कला की तुलना में शीघ्र एवं अधिक प्रभाव समाज पर पड़ता है। हर देश व प्रदेश के संगीत में भावनात्मक क्षमता को व्यक्त करने की कला विद्यमान रहती है। ऐसी क्षमता अन्य किसी कला में देखने को नहीं मिलती है।

यदि संगीत का आध्यात्मिक दृष्टि से अवलोकन किया जाए की संगीत की समाज में धार्मिक पक्ष में क्या भूमिका है तो यह बात स्पष्ट होती है कि संगीत मोक्ष प्राप्ति का सबसे सीधा, सरल व उत्तम साधन है।

आत्मा से परमात्मा के मिलन के लिए संगीत को सबसे उत्तम माध्यम माना गया है। समाज में विद्यमान प्रत्येक धर्मों के अनुयायी संगीत के माध्यम से अपने ईष्ट की उपासना करते हैं चाहे वह मंदिर हो, मस्जिद हो, चर्च हो या गुरुद्वारा हो, इस बात से यह स्पष्ट होता है कि समाज और संगीत का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है।

संगीत के व्यापक क्षेत्र को देखने पर यह ज्ञात होता है कि प्रत्येक काल में संगीत ने समाज को प्रभावित किया है या यह भी कह सकते हैं कि समाज से संगीत प्रभावित हुआ है। संगीत हर मनुष्य के जीवन का बहुत आवश्यक अंग है। संगीत मनुष्य के साथ जन्म से लेकर मृत्यु तक बना रहता है। कोई पर्व हो कोई त्यौहार हो या संस्कार ऐसा नहीं है जिसमें संगीत न हो और घर ही नहीं वरन खेतों पर काम करने वाले किसान, चक्की चलाने वाले लोग और धान कूटने वाली ग्रामीण महिलाएँ भी लोक संगीत गाती रहती हैं जिस से उनका काम सहज रूप से पूर्ण हो जाता हे। समाज में प्रचलित परम्परायें एवं प्रथायें संगीत के बिना पूर्ण नहीं हो सकती हैं। संगीत मनुष्य के जीवन में नीरसता को दूर करके नवीन स्फूर्ति भरता है और समाज को उन्नति की ओर अग्रसर करता है।

आज समाज बदला है, उसके साथ ही मूल्य भी बदले हैं, ऐसी स्थिति में संगीत एक ऐसा साधन है, जिससे देश का उत्थान हो सकता है। बच्चों को संगीत द्वारा अनुशासन प्राप्त होता है। अगर वह मंच पर प्रदर्शन करता है तो वह सम्मान करना, कल्पनाशीलता आदि के बारे में सीखता है, साथ ही आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करता है। संगीत का प्रभाव व्यक्ति के मन, शरीर, बुद्धि तथा आत्मा सभी पर होता है, ऐसी स्थिति में यदि बाल्यावस्था से ही संगीत के स्वरों का संस्कार डालना प्रारंभ कर दिया जाये तो उनमें हिसंक प्रवृत्तियों के पनपने की संभावना कम होगी एवं उनका मानसिक विकास संतुलित रूप से होगा। वैसे भी बच्चों को कविता तथा गिनती आदि गाकर सिखाया जाये तो शीघ्र स्मरण हो जाता है। इसलिए अधिकांश शिक्षा शास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने सामान्य शिक्षा के अन्तर्गत संगीत शिक्षा को शिक्षा का आवश्यक अंग माना जाता है। प्रसिद्ध दार्शनिक (प्लेटो के अनुसार) "संगीत आत्मा के चरित्र का निर्माण करता है। उत्कृष्ट संगीत एक सुव्यवस्थित समाज का गठन करता है, जबकि निम्न स्तर का संगीत राष्ट्र के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। संगीत का राजकीय नियंत्रण समाज के लिए आवश्यक है।"

संगीत मानव व्यवहार को अनुशासित ही नहीं करता वरन् विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति के स्वभाव, भाव को सहज बनाये रखता है। आज समाज के बदलते परिवेश में संगीत से व्यक्तियों की मनोवृत्ति में परिवर्तन करने एवं राष्ट्रीय एकता बनाने में सहायक है। समाज में अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्तियों को शास्त्रीय संगीत के राग, रागिनियों के प्रयोग के माध्यम से सामान्य नागरिक बनाकर जीवन यापन करने योग्य बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस क्षेत्र में देश की महिला पुलिस अधिकारी किरण बेदी ने दिल्ली के तिहाड़ जेल के कई हिंसक व अपराधी कैदियों के जीवन को संगीत माध्यम से सुधारा है। यह समाज को संगीत का सबसे बड़ा योगदान है।

सामूहिक गीत गाने से लोगों के बीच में एक भावनात्मक संबंध स्थापित हो जाता है। जब मंदिरों में घंटियों की ध्वनि गूंजने लगती है, आरती की स्वर लहरियाँ प्रारंभ होती है तो मन उल्लासित हो जाता है एवं श्रद्धा भाव से भर जाता है। भजन सुनते है तब मन संगीत की स्वर लहरियों में एकाग्र हो जाता है। ग्रामीण समाज में तो संगीत सामाजिक जीवन में और भी नजदीक जुड़ा हुआ पाते हैं। दिन भर खेतो में काम करने के बाद में सामूहिक रूप से गाते–बजाते है तब उनका उल्लास देखते ही बनता है।

फसलों की बुवाई से लेकर कटाई तक के कार्यो को सम्पन्न कराने में ग्रामीण समाज ने संगीत को अपने जीवन में स्थान दिया है। लोक उत्सवों के रूप में ग्रामीण समाज में होली, संजा, गणगौर आदि अवसर सूचक गीत गाये जाते है। शहर की अपेक्षा ग्रामीणों ने समाज में संगीत को अधिक अपनाया है।

प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक अश्वघोष बुद्ध के तत्व ज्ञान को समाज में सम्प्रेशित करने के लिए अश्वघोष गायकों की टोलियाँ बनाकर स्थान–स्थान पर घूमते थे और गायन वादन द्वारा अपना लक्ष्य पूर्ण करते थे।

पोलेण्ड के गायक "पेडेरस्की" ने संगीत के माध्यम से ही जन–जन में, समाज में राष्ट्रीय चेतना जगा दी थी।

समाज में प्रचलित संस्कार गीत, विवाह गीत, जन्म के समय गाये जाने वाले गीत, ऋतु गीत–बसंत–वर्शा, ऋतु मल्हार से सम्बन्धित गीतों के माध्यम से हर समय सामाजिक जीवन में मनुष्य के आस–पास संगीत विमान रहता है।

निष्कर्ष

इससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक आयोजन संगीत के बिना परिपूर्ण नहीं हो सकते हैं। संगीत समाज के आंतरिक और बाह्य पक्ष को पोषित कर आंनदमय बनाता है। संगीत कला अपने आप में ऐसी विशेषताएँ लिये हुए है जिस से मनुष्य समाज के लिये भावनाओं से पूर्ण होकर मानवता के विकास में सहायक हो जाता है। इसलिए संगीत समाज में बहुत महत्त्वूपर्ण भूमिका निभाता है और समाज के विकास के साथ ही साथ संगीत भी विकसित होता है। आज के बदलते सामाजिक मूल्यों एवं परिवेश में संगीत की सामूहिकता के साथ मनुष्य अनुशासन में भी रहता है। यह अनुशासन संगीत के अपूर्व लय प्रदान करता है और यही लय स्वर से घुलमिलकर हृदयों में संवाद पैदा करती है। केवल जन–गण–मन का सामूहिक गान लाखों भारतीयों में देश के प्रति गर्व की भावना पैदा करता है। इसी प्रकार ऐसे कितने ही देश भक्ति के गीत है, उदाहरण के लिए–हम होंगे कामयाब, मेरे वतन के लोगों, इतनी शक्ति हमें देना दाता आदि गीतों के द्वारा अर्थात् संगीत ही तो है जो व्यक्ति को सामाजिक बनाने का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली घटक है यह प्रामाणिक सत्य है। संगीत से मनोरंजन तो होता ही है लेकिन मनोरंजन से अधिक महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास अर्थात् समाज का विकास जिसमें संगीत के प्रचार–प्रसार के माध्यमों का प्रयोग द्वारा ही संभव हो सकता है। यह अनुभव किया जा चुका है। इसे प्रभावशाली माध्यम के रूप में व्यापकता के साथ अपनाया जा सकता है, जिसमें समाज का कल्याण हो।

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, डा. सत्यवती. (1995). संगीत का समाजशास्त्र, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. पुरी, डॉ. मृदुला. (2007). संगीत मीमांसा, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
3. श्रीवास्त, प्रो. हरिश्चन्द्र. (2011). संगीत निबंध संग्रह, संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद
4. शर्मा, डॉ. राजेन्द्र कुमार. समाज मनोविज्ञान
5. मिश्रा, डॉ. लालमणि. संगीत एवं समाज
6. बसु, डॉ. पुष्पा. संगीत निबंध कुंज